# युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के 6वीं पुण्यतिथि

**के उपलक्ष्य में आयोजित**

## प्रेस विज्ञप्ति
## श्रीरामकथा ज्ञान–यज्ञ

गोरखपुर 04 सितम्बर, 2020। गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में **युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जी** की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित वाल्मीकि रामायण पर आधारित संगीतमय रामकथा के छठवें दिन कि कथा में कथा व्यास **अनन्त श्री विभूषित जगतगुरु स्वामी रामानुजाचार्य श्री राघवाचार्य जी महाराज** ने कहा कि भक्त का भगवान में विश्वास परम दृढ़ होना चाहिए। विश्वास न होने पर ईश्वर की प्राप्ति सम्भव नहीं। भक्त स्वप्न में भी दूसरो के दोष का दर्शन नहीं करता। भक्त को सरल तथा अभिमान रहित होना चाहिए तभी ईश्वर की प्राप्ति होती है। इंद्रियों को जब जीव बुद्धि के द्वारा नियंत्रित कर लेता है तो उसे दम कहा जाता है। शास्त्रों में यह दम भी भगवान की भक्ति का साधन कहा गया है तथा भगवान की भक्ति करते हुए सर्वत्र जीव मात्र में जो व्यक्ति परमात्मा स्वरुप ब्रह्म को मानता है व विश्वास करता है वही भक्त ईश्वर को प्रिय होता है लेकिन जीव का यह दुर्भाग्य है कि वह अहंकार वश कण–कण में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता।

आज की कथा में कथा व्यास ने भगवान श्रीराम एवं माता सीता के विवाह का वर्णन करते हुए कहा कि मिथिला के सभी व्यक्ति महान विद्वान थे। ज्ञान, सहजता से प्रत्येक व्यक्ति में आ जाता था क्योंकि राजा जनक स्वयं राजा के रूप में ऋषि थे। मिथिला में जितने भी राजा हुए सभी ब्रह्मविद्या विशारद थे। सभी आत्मविद्या में निपुण थे इसलिए मिथिला को ज्ञान की नगरी कहा जाता है। मिथिला का डोम भी अयोध्या का अन्न नहीं खाया क्योंकि बेटी के घर का अन्न नहीं खाना चाहिए। श्रीराम के विवाह का निमंत्रण स्वयं नारद जी ने महाराज दशरथ के सगे सम्बन्धियों को दिया। अयोध्या के ऐश्वर्य के आगे इन्द्र और कुबेर भी लज्जीत होते थे। राजा जनक ने अपने दूतों को सीता स्वयंवर में राम जी द्वारा शिव धनुष भंग का संदेश तथा दशरथ जी को बारात लाने का निमंत्रण दिया। कथा व्यास ने **'हम त पाती लेके आवत बानी पार से, राजा जनक के दरबार से ना'** इस भजन के द्वारा मिथिला के दूतो ने दशरथ जी को जनक जी का संदेश दिया और वहां के स्वयंवर का पुरा वृतांत सुनाया। इस भजन पर भक्तजन झूमते रहे। भगवान श्रीराम के विवाह में सारे मंगल इसलिए उपस्थित हुए कि वे भी सार्थक हो जावें। भगवान श्रीराम जी की बारात अद्भूत बारात थी क्योंकि उस बारात में दूल्हा तथा विवाह की तिथि नहीं निश्चित थी। **'मेरे रामजी की गजब बारात, अवध से मिथिला चली'** भजन पर श्रोताओं ने आनन्द लिया। जब बारात मिथिला पहुंचती है तो वहां बालक, वृद्ध, स्त्रीयां सभी झूम उठते हैं और गाते हैं **'आज मिथिला नगरिया निहाल सखियां, चारो दूल्हा में बड़का कमाल सखियां'** इस भजन द्वारा मिथिला में बारात का स्वागत किया गया।

कथा व्यास ने कहा कि भगवान रघुनंदन श्रीराम ने माता शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश दिया था जिसमें श्रद्धा पूर्वक गुरु की सेवा करना भगवान रघुनंदन श्रीराम के गुणों का श्रद्धा पूर्वक गान करना ही नवधा भक्ति के अंतर्गत बताया था। अगर कपट पूर्वक भगवान के गुणों का कोई गान करता है तो उसे कभी भी सच्चिदानंद स्वरूप परमात्मा का आश्रय नहीं प्राप्त हो सकता। प्रभु श्रीराम को छल–कपट स्वीकार नहीं उनके लिए तो मात्र निर्मल मन का

होना ही भक्त होने का प्रमाण है। परमात्मा पर अगर कोई जीव विश्वास कर लेता है तो उसको गंतव्य तक वे पहुंचा ही देते हैं।

कथा के बीच में कथा व्यास द्वारा अनेक भजन गाए गयें, जिस पर भक्तगण झूमते रहे। सम्पूर्ण कथा **'श्रीगोरखनाथ मन्दिर'** के फेसबुक पेज एवं यूट्यूब चैनल के माध्यम से सजीव प्रसारण हुआ तथा कथा सभागार में 80 श्रद्धालुओं की बैठने की व्यवस्था थी और सोशल डिस्टेंसिंग को ध्यान में रखते हुए कथा का श्रवण किये।

कथा का समापन आरती एवं प्रसाद वितरण के साथ हुआ। संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह जी ने किया। इस अवसर पर प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, महन्त मिथिलेशनाथ जी महाराज, डॉ0 अरविन्द कुमार चतुर्वेदी, डॉ0 दिग्विजय शुक्ल, डॉ0 अभिषेक पाण्डेय, बृजेशमणि मिश्र, डॉ0 रोहित कुमार मिश्र, डॉ0 दिग्विजय शुक्ल, दीप नारायण कन्नौजिया, नित्यानन्द तिवारी, विनय गौतम, विकास जालान, महेश पोद्दार, शशी कुमार यादव आदि उपस्थित रहें।